भजन

तर्जः हमें और जीने की चाहत

हमें धाम चलने की चाहत ना होती
अगर ना बताते अगर तुम ना आते

1) तुम्हे भूल कर तो लगता था ऐसे, गमों के ही दरिया में आये हो जैसे
दिखाई ना देती अन्धेरों में कश्ती, अगर ना दिखाते अगर तुम ना आते

2) पिया जी तुम्हारा जो सहारा ना मिलता,भंवर में ही रहते किनारा ना मिलता
किनारे पे लाके ये माया डुबोती, अगर ना बताते अगर तुम ना होते

3) हमें अब पता है कि तुम मेरे क्या हो, अपनी रूहों के तुम्हीं शहनशाह हो
मेरे रुबरू ये चिलमन ना होती, अगर ना हटाते अगर तुम ना आते

4) बख्शी खता फिर भी लेने को आए,जहाँ में ना ऐसा कोई ढूंढ पाये
मैं आशा की लड़ियाँ ना रह-रह पिरौती, अगर तुम ना आते -----